मधुबन ओम् शान्ति अंक 373 अगस्त 2023

पत्र-पुष्प

"ज्वाला स्वरूप याद द्वारा वायुमण्डल को शक्तिशाली बनाओ"
(20-07-23)

परमप्रिय अव्यक्त मूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा अपनी श्रेष्ठ शुभ व कल्याण की वृत्ति द्वारा शक्तिशाली वायुमण्डल बनाने वाले, संकल्पों की ट्रैफिक को सेकण्ड में स्टॉप कर ज्वाला स्वरूप याद का अनुभव करने वाले, लाइट हाउस, माइट हाउस स्थिति में रहने वाले विश्व सेवाधारी, निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - मीठे बाबा का हम बच्चों प्रति विशेष इशारा है कि बच्चे, वर्तमान समय संगठित रूप में ज्वाला स्वरूप याद की आवश्यकता है, इससे ही वायुमण्डल शक्तिशाली बनेगा, निर्बल आत्मायें शक्ति सम्पन्न बनेंगी। सभी विघ्न सहज समाप्त हो जायेंगे। तो अभी आप सभी बाबा के बच्चों को अपने महान तपस्वी रुप द्वारा स्व कल्याण के साथ विश्व कल्याण के निमित्त बनना है। जैसे सूर्य की किरणें चारों ओर फैलती हैं, ऐसे मास्टर सर्वशक्तिवान की स्टेज पर स्थित रह सर्व शक्तियों व विशेषताओं रूपी किरणें चारों ओर फैलानी हैं। इसके लिए कर्म में आते, विस्तार में आते, रमणीकता में आते, सम्बन्ध और सम्पर्क में आते, न्यारा रहना है। जैसे सम्बन्ध व कर्म में आना सहज है, ऐसे ही न्यारा होना भी सहज हो। अति के समय एक सेकेण्ड में अन्त हो जाये - यही है लास्ट स्टेज का पुरुषार्थ। अभी-अभी अति सम्बन्ध में आये और अभी-अभी न्यारे। जैसे लाइट हाउस में समा जाएं। इसी अभ्यास से लाइट हाउस, माइट हाउस स्थिति बनेगी और अनेक आत्माओं को साक्षात्कार होंगे - यही प्रत्यक्षता का साधन है। बोलो, हमारी मीठी बहिनें, ऐसा ही लक्ष्य रख सच्चे दिल की साधना करते सबको शक्तिशाली याद में रहने की विधियां सिखा रही हो ना!

समय कितना फास्ट गति से अपनी नई-नई रंगत दिखाता रहता है। प्रकृति की हलचल के समाचार भी सुन रहे हो। बाबा कहते बच्चे, हलचल के वातावरण में अचल रहने का अभ्यास करो। सर्वशक्तिवान साथी को सदा साथ रख, एकरस साक्षी स्थिति द्वारा हर परिस्थिति में विजयी बनना और बनाना है। अभी बातों के विस्तार में जाने के बजाए सेकेण्ड में फुलस्टाप लगाने का अभ्यास करते चलो। मन और बुद्धि को कन्ट्रोल करने की ब्रेक पावरफुल हो तब बुद्धि की शक्ति वा कोई भी एनर्जी वेस्ट नहीं जायेगी, जमा होती रहेगी। अभी सेवाओं के साथ-साथ सभी को अपनी अचल-अडोल एकरस खुशनुमा स्थिति बनाने का विशेष लक्ष्य रख आगे बढ़ना है। करनकरावनहार बाबा अपने बच्चों को निमित्त बनाए अच्छे से अच्छी सेवा करा रहा है। हमें सिर्फ बाबा का राइट इन्स्ट्रुवमेंट बनना है।

बाकी आप सभी प्यारे बाबा की विचित्र लीलाओं को देखते, परिवर्तन की इस बेला में स्व-परिवर्तन का लक्ष्य रख आगे बढ़ रहे हो, बढ़ते चलो। बाबा अव्यक्त वतन से हर बच्चे की वन्डरफुल पालना कर रहे हैं। नये-नये बच्चों के अनुभव सुनते दिल से यही निकलता वाह बाबा वाह! वाह आपकी विचित्र लीला वाह! कैसे गुप्त रूप से अपनी स्थापना का कार्य सम्पन्न करा रहे हो। शुक्रिया बाबा आपका। अच्छा - आप सभी खुशमौज में होंगे!

सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.रतनमोहिनी

ये अव्यक्त इशारे

ज्वालामुखी योग तपस्या द्वारा वायुमण्डल का परिवर्तन करो

1) लाइट हाउस और माइट हाउस की शक्तिशाली स्थिति ही ज्वालामुखी स्थिति है, इसके लिए विशेष ज्ञान-स्वरूप के अनुभवी बन शक्तिशाली बनो, जिससे आप श्रेष्ठ आत्माओं की शुभ वृत्ति व कल्याण की वृत्ति और शक्तिशाली वातावरण द्वारा अनेक तड़पती हुई, भटकती हुई, पुकार करने वाली आत्माओं को आनन्द, शान्ति और शक्ति की अनुभूति हो।

2) सेवाधारी हो, स्नेही हो, एक बल एक भरोसे वाले हो, यह तो सब ठीक है, लेकिन मास्टर सर्वशक्तिवान की स्टेज अर्थात् लाइट माइट हाउस की स्टेज, अब स्टेज पर आ जाए, याद ज्वाला रूप हो जाए तो सब आपके आगे परवाने के समान चक्र लगाने लग जाएं।

3) ज्वाला स्वरूप याद के लिए मन और बुद्धि दोनों को एक तो पावरफुल ब्रेक चाहिए और मोड़ने की भी शक्ति चाहिए। इससे बुद्धि की शक्ति वा कोई भी एनर्जी वेस्ट ना होकर जमा होती जायेगी। जितनी जमा होगी उतना ही परखने की, निर्णय करने की शक्ति बढ़ेगी। इसके लिए अब संकल्पों का बिस्तर बन्द करते चलो अर्थात् समेटने की शक्ति धारण करो।

4) कोई भी कार्य करते वा बात करते बीच-बीच में संकल्पों की ट्रैफिक को स्टॉप करो। एक मिनट के लिए भी मन के संकल्पों को, चाहे शरीर द्वारा चलते हुए कर्म को बीच में रोक कर भी यह प्रैक्टिस करो तब बिन्दू रूप की पावरफुल स्टेज पर स्थित हो सकेंगे। जैसे अव्यक्त स्थिति में रह कार्य करना सरल होता जा रहा है वैसे ही यह बिन्दुरूप की स्थिति भी सहज हो जाये।

5) जैसे कोई भी कीटाणु को मारने के लिए डॉक्टर लोग बिजली की रेज़ेस देते हैं। ऐसे याद की शक्तिशाली किरणें एक सेकेण्ड में अनेक विकर्मों रूपी कीटाणु भस्म कर देती हैं। विकर्म भस्म हो गये तो फिर अपने को हल्का और शक्तिशाली अनुभव करेंगे।

6) आप बच्चों के पास पवित्रता की जो महान शक्ति है, यह श्रेष्ठ शक्ति ही अग्नि का काम करती है जो सेकण्ड में विश्व के किचड़े को भस्म कर सकती है। जब आत्मा पवित्रता की सम्पूर्ण स्थिति में स्थित होती है तो उस स्थिति के श्रेष्ठ संकल्प से लगन की अग्नि प्रज्वलित होती है और किचड़ा भस्म हो जाता है, वास्तव में यही योग ज्वाला है। अभी आप बच्चे अपनी इस श्रेष्ठ शक्ति को कार्य में लगाओ।

7) ज्वाला-रूप बनने का मुख्य और सहज पुरुषार्थ - सदा यही धुन रहे कि अब वापिस घर जाना है और सबको साथ ले जाना है। इस स्मृति से स्वत: ही सर्व-सम्बन्ध, सर्व प्रकृति की आकर्षण से उपराम अर्थात् साक्षी बन जायेंगे। साक्षी बनने से सहज ही बाप के साथी वा बाप-समान बन जायेंगे।

8) निरन्तर सहजयोगी तो हो सिर्फ इस याद की स्टेज को बीच-बीच में पावरफुल बनाने के लिए अटेन्शन का फोर्स भरते रहो। पवित्रता की धारणा जब सम्पूर्ण रूप में होगी तब आपके श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति लगन की अग्नि प्रज्जवलित करेगी, उस अग्नि में सब किचड़ा भस्म हो जायेगा। फिर जो सोचेंगे वही होगा, विंहग मार्ग की सेवा स्वत: हो जायेगी।

9) कोई भी हिसाब चाहे इस जन्म का, चाहे पिछले जन्म का, लग्न की अग्नि-स्वरूप स्थिति के बिना भस्म नहीं होता। सदा अग्नि-स्वरूप स्थिति अर्थात् ज्वालामुखी शक्तिशाली याद, बीजरूप, लाइट हाउस, माइट हाउस स्थिति में पुराने हिसाब-किताब भस्म हो जायेंगे और अपने आपको डबल लाइट अनुभव करेंगे।

10) शक्तिशाली ज्वाला स्वरूप की याद तब रहेगी जब याद का लिंक सदा जुटा रहेगा। अगर बार-बार लिंक टूटता है, तो उसे जोड़ने में समय भी लगता, मेहनत भी लगती और शक्तिशाली के बजाए कमजोर हो जाते हो।

11) याद को शक्तिशाली बनाने के लिए विस्तार में जाते सार की स्थिति का अभ्यास करो। विस्तार में सार भूल न जाये। खाओ-पियो, सेवा करो लेकिन न्यारेपन को नहीं भूलो। साधना अर्थात् शक्तिशाली याद। निरन्तर बाप के साथ दिल का सम्बन्ध। साधना इसको नहीं कहते कि सिर्फ योग में बैठ गये लेकिन जैसे शरीर से बैठते हो वैसे दिल, मन, बुद्धि एक बाप की तरफ बाप के साथ-साथ बैठ जाए। ऐसी एकाग्रता ही ज्वाला को प्रज्जवलित करेगी।

12) याद की यात्रा सहज भी हो और शक्तिशाली भी हो, पावरफुल याद एक समय पर डबल अनुभव कराती है। एक तरफ याद अग्नि बन भस्म करने का काम करती है, परिवर्तन करने का काम करती है और दूसरे तरफ खुशी और हल्केपन का अनुभव कराती है। ऐसे विधिपूर्वक याद को ही यथार्थ और शक्तिशाली याद कहा जाता है।

13) वर्तमान समय संगठित रूप के ज्वाला स्वरूप की आवश्यकता है। ज्वाला स्वरूप की याद ही शक्तिशाली वायुमण्डल बनायेगी और निर्बल आत्मायें शक्ति सम्पन्न बनेंगी। सभी विघ्न सहज समाप्त हो जायेंगे और पुरानी दुनिया के विनाश की ज्वाला भड़केगी।

14) जैसे सूर्य विश्व को रोशनी की और अनेक विनाशी प्राप्तियों की अनुभूति कराता है। ऐसे आप बच्चे अपने महान तपस्वी रूप द्वारा प्राप्ति के किरणों की अनुभूति कराओ। इसके लिए पहले जमा का खाता बढ़ाओ। जैसे सूर्य की किरणें चारों ओर फैलती हैं, ऐसे आप मास्टर सर्वशक्तिवान् की स्टेज पर रहो तो शक्तियों व विशेषताओं रूपी किरणें चारों ओर फैलती अनुभव करेंगे।

15) जैसे अग्नि में कोई भी चीज़ डालने से उसका नाम, रूप, गुण सब बदल जाता है, ऐसे जब बाप के याद की, लगन की अग्नि में पड़ते हो तो परिवर्तन हो जाते हो! मनुष्य से ब्राह्मण बन जाते, फिर ब्राह्मण से फरिश्ता सो देवता बन जाते। जैसे कच्ची मिट्टी को साँचे में ढालकर आग में डालते हैं तो ईट बन जाती, ऐसे यह भी परिवर्तन हो जाता इसलिए इस याद को ही ज्वाला रूप लाइट माइट सम्पन्न शक्तिशाली योग कहा जाता है।

16) कर्म में आते, विस्तार में आते, रमणीकता में आते, सम्बन्ध और सम्पर्क में आते, न्यारे बनने का अभ्यास करो। जैसे सम्बन्ध व कर्म में आना सहज है, वैसे ही न्यारा होना भी सहज हो। ऐसी प्रैक्टिस चाहिये। अति के समय एक सेकेण्ड में अन्त हो जाये - यह है लास्ट स्टेज का पुरुषार्थ। अभी-अभी अति सम्बन्ध में और अभी-अभी जितना सम्पर्क में उतना न्यारा। जैसे लाइट हाउस में समा जाएं। इसी अभ्यास से लाइट हाउस, माइट हाउस स्थिति बनेगी और अनेक आत्माओं को साक्षात्कार होंगे - यही प्रत्यक्षता का साधन है।

17) शक्तिशाली योग अभ्यास के लिए अपने संकल्प को शुद्ध, ज्ञान स्वरूप बनाओ, शक्ति स्वरूप बनाओ। तो आपके वायब्रेशन से, वृत्ति से, शुभ भावना से दूसरे की माया सहज भाग जायेगी। अगर क्यों, क्या में जायेंगे, तो न आपकी माया जायेगी न दूसरे की जायेगी।

18) पावरफुल योग अर्थात् लगन की अग्नि, ज्वाला रूप की याद ही भ्रष्टाचार, अत्याचार की अग्नि को समाप्त करेगी और सर्व आत्माओं को सहयोग देगी। इससे ही बेहद की वैराग्य वृत्ति प्रज्वलित होगी। याद की अग्नि एक तरफ उस अग्नि को समाप्त करेगी दूसरी तरफ आत्माओं को परमात्म सन्देश की, शीतल स्वरूप की अनुभूति करोयगी। इससे ही आत्मायें पापों की आग से मुक्त हो सकेंगी।

19) योग को ज्वाला रूप बनाने के लिए सेकण्ड में बिन्दी स्वरूप बन मन-बुद्धि को एकाग्र करने का अभ्यास बार-बार करो। स्टॉप कहा और सेकण्ड में व्यर्थ देह-भान से मन-बुद्धि एकाग्र हो जाए। ऐसी कन्ट्रोलिंग पावर सारे दिन में यूज़ करो। पावरफुल ब्रेक द्वारा मन-बुद्धि को कन्ट्रोल करो, जहाँ मन-बुद्धि को लगाना चाहो वहाँ सेकण्ड में लग जाए।

20) जब योग में बैठते हो तो समाने की शक्ति सेकण्ड में यूज़ करो। सेवा के संकल्प भी समा जाएं इतनी शक्ति हो जो स्टॉप कहा और स्टॉप हो जाए। फुल ब्रेक लगे, ढीली ब्रेक नहीं। अगर एक सेकण्ड के बजाए ज्यादा समय लग जाता है तो समाने की शक्ति कमजोर कहंगे।

21) पावरफुल मन की निशानी है – सेकण्ड में जहाँ चाहे वहाँ पहुंच जाए। मन को जब उड़ना आ गया, प्रैक्टिस हो गई तो सेकण्ड में जहाँ चाहे वहाँ पहुंच सकता है। अभी-अभी साकार वतन में, अभी-अभी परमधाम में, सेकण्ड की रफ्तार है - अब इसी अभ्यास को बढ़ाओ।

22) पावरफुल याद के लिए सच्चे दिल का प्यार चाहिए। सच्ची दिल वाले सेकण्ड में बिन्दु बन बिन्दु स्वरूप बाप को याद कर सकते हैं। सच्ची दिल वाले सच्चे साहेब को राज़ी करने के कारण, बाप की विशेष दुआयें प्राप्त करते हैं, जिससे सहज ही एक संकल्प में स्थित हो ज्वाला रूप की याद का अनुभव कर सकते हो, पावरफुल वायब्रेशन फैला सकते हो।

23) योग में सदा लाइट हाउस और माइट हाउस की स्थिति का अनुभव करो। ज्ञान है लाइट और योग है माइट। ज्ञान और योग - दोनों शक्तियां लाइट और माइट सम्पन्न हों – इसको कहते हैं मास्टर सर्वशक्तिमान।

24) ज्वाला स्वरूप की स्थिति का अनुभव करने के लिए निरन्तर याद की ज्वाला प्रज्वलित रहे। इसकी सहज विधि है - सदा अपने को ''सारथी'' और ''साक्षी'' समझकर चलो। आत्मा इस रथ की सारथी है - यह स्मृति स्वत: ही इस रथ (देह) से वा किसी भी प्रकार के देहभान से न्यारा बना देती है। स्वयं को सारथी समझने से सर्व कर्मेन्द्रियाँ अपने कन्ट्रोल में रहती हैं। सूक्ष्म शक्तियां ''मन-बुद्धि-संस्कार'' भी ऑर्डर प्रमाण रहते हैं।

25) सारथी अर्थात् आत्म-अभिमानी क्योंकि आत्मा ही सारथी है। ब्रह्मा बाप ने इस विधि से नम्बरवन की सिद्धि प्राप्त की। तो फॉलो फॉदर करो। जैसे बाप देह को अधीन कर प्रवेश होते अर्थात् सारथी बनते हैं देह के अधीन नहीं होते, इसलिए न्यारे और प्यारे हैं। ऐसे ही आप सभी ब्राह्मण आत्माएं भी बाप समान सारथी की स्थिति में रहो। सारथी स्वत: ही साक्षी हो कुछ भी करेंगे, देखेंगे, सुनेंगे, सब-कुछ करते भी माया की लेप-छेप से निर्लेप रहेंगे।

26) जैसे देवियों के यादगार में दिखाते हैं कि ज्वाला से असुरों को भस्म कर दिया। असुर नहीं लेकिन आसुरी शक्तियों को खत्म कर दिया। यह अभी का ही यादगार है। तो ऐसे ज्वालामुखी बन आसुरी संस्कार, आसुरी स्वभाव, सब कुछ भस्म करो। जब अपने पुराने आसुरी संस्कार भस्म कर लेंगे तब निर्भय, ज्वालामुखी बन प्रकृति और आत्माओं के अन्दर जो तमोगुण है उसे भी भस्म कर सकेंगे।

27) बापदादा बच्चों को विशेष ईशारा दे रहे हैं - बच्चे अब तीव्र पुरुषार्थ की लगन को अग्नि रूप में लाओ, ज्वालामुखी बनो। जो भी मन के, सम्बन्ध-सम्पर्क के हिसाब-किताब रहे हुए हैं - उन्हें ज्वाला स्वरूप की याद से भस्म करो। आपकी ज्वाला रूप की याद ही भ्रष्टाचार, अत्याचार की अग्नि को समाप्त करेगी और सर्व आत्माओं को सहयोग देगी, इससे ही बेहद की वैराग्य वृत्ति उत्पन्न होगी।

28) समय प्रमाण अब सर्व ब्राह्मण आत्माओं को समीप लाते हुए ज्वाला स्वरूप का वायुमण्डल बनाने की सेवा करो, उसके लिए चाहे भट्ठियां करो या आपस में संगठित होकर रूहरिहान करो लेकिन ज्वाला स्वरूप का अनुभव करो और कराओ, इस सेवा में लग जाओ तो छोटी-छोटी बातें सहज परिवर्तन हो जायेंगी।

29) योग में जब और सब संकल्प शान्त हो जाते हैं, एक ही संकल्प रहता ''बाप और मैं'' इसी को ही पावरफुल योग कहते हैं। बाप के मिलन की अनुभूति के सिवाए और सब संकल्प समा जायें तब कहेंगे ज्वाला रूप की याद, जिससे परिवर्तन होता है, इसके लिए समाने की शक्ति यूज़ करो। स्टॉप कहो और संकल्प स्टॉप हो जायें। फुल ब्रेक लगे, ढीली नहीं।

30) कई बच्चे कहते हैं कि जब योग में बैठते हैं तो आत्म-अभिमानी होने के बदले सेवा याद आती है। लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिए क्योंकि लास्ट समय अगर अशरीरी बनने की बजाए सेवा का भी संकल्प चला तो सेकण्ड के पेपर में फेल हो जायेंगे। उस समय सिवाय बाप के, निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी - और कुछ याद नहीं। सेवा में फिर भी साकार में आ जायेंगे इसलिए जिस समय जो चाहे वह स्थिति हो नहीं तो धोखा मिल जायेगा।

31) तपस्वी मूर्त का अर्थ है - तपस्या द्वारा शान्ति के शक्ति की किरणें चारों ओर फैलती हुई अनुभव में आयें। यह तपस्वी स्वरूप औरों को देने का स्वरूप है। महान तपस्वी आत्मायें ज्वाला रुप शक्तिशाली याद द्वारा प्राप्ति के किरणों की अनुभूति कराती हैं।

(त्रिमूर्ति दादियों के अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* *मधुबन*

गुल्जार दादी जी के अमृत वचन

"योग को शक्तिशाली बनाओ, शुभ भावना, शुभ कामना सम्पन्न बनो तब वृत्ति से वायुमण्डल बनेगा" (29-8-07)

जैसे हमारी दादी स्वयं भी सदा स्वमान में रही और दूसरों को भी सम्मान दिया, चाहे कोई छोटा हो या बड़ा, लेकिन दादी द्वारा उनको प्यार और सम्मान मिला है। जो स्वमान में रहेगा वह ऑटोमेटिक सबको सम्मान देगा। स्वमान में रहने से सबके प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रहती ही है क्योंकि वो स्वयं ही अपने को एक मालिकपन की स्थिति में अनुभव करता है और उनका जो भी संकल्प होगा, जो भी वाणी के शब्द होंगे, वो बाबा के हर फरमान को मानने वाले होंगे।

जैसे हमने देखा, हमारी जगत अम्बा माँ नम्बरवन क्यों बनी? हमने देखा मम्मा जब आई, शुरू में तो मम्मा को ज्ञान देने वाली, कोर्स कराने वाली मम्मा से बहुत होशियार थी। फिर भी मम्मा, मम्मा क्यों बनी? वन टू नम्बर कैसे बनी? उसका मूल आधार देखा जाये तो मम्मा का एक ही शब्द होता था कि मेरा लक्ष्य है - बाबा ने कहा और मैंने किया। इसका अर्थ है कि जो बाबा की श्रीमत है, श्रीमत देखो, सुबह से ले करके रात्रि सोने तक हर कर्म की शिक्षा बाबा से मिली हुई है। उस अनुसार मम्मा ने प्रैक्टिकल किया, बाबा ने कहा मम्मा ने किया, तो नम्बर ले लिया।

फिर दादी को देखो, दादी की भी यही एम रही, जो बाबा ने कहा है वो मुझे करना है। ब्रह्माबाबा से प्यार है तो उसका रिटर्न जरुर हमको देना है। लेकिन अभी दादी से भी आप सबका प्यार

है, तो जो दादी ने किया, दादी ने करके प्रैक्टिकल अपने लाइफ से दिखाया। वो करके आपको दादी को भी रिटर्न देना है, अभी डबल रिटर्न देना है। तो डबल रिटर्न देने की हिम्मत है? क्योंकि प्यार इसी को ही कहा जाता है। जिससे प्यार होता है वो जो कहेगा उसको टाल नहीं सकते हैं। तो हमें अपने को चेक करना है कि सभी के प्रति, हमें सम्मान की वृत्ति रहती है? और अगर हम सम्मान देने वाले हैं उनसे हर एक को यही फीलिंग आती है कि यह हमारे हैं। जैसे दादी से यह फीलिंग आती थी कि हमारी है। हर एक की हुज्जत होती थी दादी के ऊपर। तो हमारी लाइफ में भी हमारी ऐसी नेचर हो जिससे हर एक समझे तो यह हमारे हैं, इतने इज़ी हैं? इतने लवली हैं? तो अपने आपको चेक करना पड़ेगा।

हमारे में छोटा बड़ा वो तो नम्बरवार होगा ही लेकिन हमारी किसी के प्रति भी निगेटिव वृत्ति नहीं होनी चाहिए क्योंकि हम दूसरों को कोर्स कराते हैं कि निगेटिव को पॉजिटिव में चेन्ज करो। तो जो हम कहते हैं पहले किसके कानों में पड़ता है? पहले हमारे कानों में पड़ता है, तो हम दूसरों को सुनाते हैं माना पहले अपने को सुनाते हैं। तो यह चेकिंग अगर हमारी हो जाये, मानो कई कहते हैं कि क्या करें - इनका स्वभाव है ही ऐसा। तो बाबा ने एक बारी कहा था है कि क्या यह कहना राइट है? एक है समझना और दूसरा है उसकी कमजोरी को अपने दिल में समाना। समझना और समाना इसमें रात-दिन का फ़र्क है। अगर मानों हमारे मन में उसकी कमी समा जाती है तब तो हमारी चाल-चलन उनसे वैसे चलती है ना, लेकिन अगर उसकी खराबी हम समझते हैं कि यह गलत है, माना वो अच्छी चीज़ नहीं है, तो उस बुरी चीज़ को जानते हुए हम अपने मन में समा क्यों देते हैं? उसकी रिजल्ट क्या होगी? जैसे भोजन में अगर खराबी है और वो भूल से भी खा लेते हैं, पेट में चला जाता है तो उसका नुकसान होता है ना? तो जैसे खराब भोजन पेट में समा गया तो नुकसान होता है, ऐसे अगर उनकी खराबी मेरे मन में समा गई फिर हम उनसे जो भी एक्ट करेंगे वो उसी भावना से करेंगे क्योंकि उसके प्रति खराब भावना हमारे मन में समाई हुई है। तो हमारा उससे बोल, हमारी चाल सब उसी प्रमाण ही चलेगी।

तो किसी भी खराब चीज़ को अगर आप अपने मन में समाते हो तो उसका कारण क्या होता है? खराब चीज़ बाबा ने तो नहीं दी है, खराब जो भी कोई संस्कार कहो, संकल्प कहो, अन्दर मन में मैंने समा लिया तो वो रावण की प्रॉपर्टी है। तो जिसके दिल में, मन में रावण की प्रॉपर्टी है उसके दिल में बाबा कम्बाइण्ड कैसे रह सकता है? हम कभी-कभी यह समझते भी हैं कि यह नहीं होना चाहिए लेकिन वो सब समझते हुए भी जो नहीं होना चाहिए, नहीं करना चाहिए वो हो ही जाता है, उसका कारण क्या है? इसका सूक्ष्म कारण यही है कि कम्बाइण्ड रूप से बाबा जो हमका मदद देवे, वो मन में मदद के लिए है ही नहीं। तो बाबा की मदद न मिलने के कारण हम जो चाहते हैं वह कर नहीं पाते। जिस समय कोई गलती होती है तो आत्मा कमजोर हो ही जाती है, ऐसे टाइम पर बाबा के कम्बाइण्ड स्वरूप की मदद फायदा देती है। और जब हमारे पास कम्बाइण्ड की फीलिंग ही नहीं है तो मदद कैसे मिलेगी। तब कहा कि जैसे बाबा ने डायरेक्शन दिया है कि समझो भले लेकिन दिल में समाओ नहीं क्योंकि भावना ही वो हो जाती है, समझो वो अच्छा भी करेगा, तो भी मेरे मन में यह भावना है - यह है ही ऐसे, तो हमको उसकी अच्छाई में भी बुराई की ही फीलिंग आयेगी, कुछ भी अच्छा ही नहीं लगेगा।

दादी सबको प्यारी क्यों लगती थी? दादी अगर कोई भी बात देखती थी, दादी के पास किसी की भी रिपोर्ट आ जाए लेकिन दादी मन में कभी भी नहीं रखती थी। तो ऐसे अपने को चेक करो कि हमारी हर आत्मा के प्रति ऐसी शुभ भावना है? उनके निगेटिव कर्म का, वाणी का प्रभाव हमारे मन में तो नहीं है? तो जैसे बाबा की हैण्डलिंग भी ऐसे ही रही प्यार देने की, भले निगेटिव को जानता था लेकिन वो सब जानते हुए भी बाबा की फीलिंग शुभ भावना, शुभ कामना की रहती थी। ऐसे ही हम अपने को चेक करें। वृत्ति से वायब्रेशन होते हैं। किसी के प्रति बहुत अच्छी वृत्ति है, यह बहुत अच्छे पुरुषार्थी हैं, बहुत एक्यूरेट हैं तो हमारे वायब्रेशन उसके प्रति क्या होंगे? तो हमको कौन-सी सेवा अभी करनी चाहिए? हमको भी दादी से प्यार है तो उसका रिटर्न हम क्या देंगे? हम वाणी में आते हुए शक्तिशाली वृत्ति से वायुमण्डल बनाने की सेवा करें।

अभी योग को बहुत पॉवरफुल शक्तिशाली, ज्वालामुखी बनाना है। जिसमें मन की एकदम एकाग्रता भी हो और दूसरा हर आत्मा के प्रति रहमदिल की भावना इमर्ज हो। तो ऐसे अभी हम लोग अगर ज्वालामुखी योग में बैठे हैं, तो क्या हर आत्मा के प्रति मैं सुख दे रही हूँ, शान्ति की फीलिंग दे रही हूँ, यह संकल्प चलेंगे या सिर्फ हम अपने योग के पॉवरफुल स्टेज में होंगे? सूर्य जब उदय होता है और किरणें देता है तो उन किरणों द्वारा कहाँ पानी को सुखाने की सेवा होती है और कहाँ पानी बरसाने की सेवा करता है, दोनों ही करता है तो क्या सूर्य मन में संकल्प करता है कि मुझे यहाँ सुखाना है, यहाँ बरसाना है? नहीं। ऑटोमेटिकली सूर्य जब उदय होता है और उनकी किरणें फैलती है तो जहाँ जो आवश्यकता है, समझो सुखाने के शक्ति की

आवश्यकता है, बरसाने के शक्ति की आवश्यकता है, तो जब सूर्य की किरणें निकलती हैं उनसे स्वत: ही वो प्राप्ति होती है। तो हमको भी यह संकल्प करने की जरुरत नहीं है लेकिन हम मास्टर सर्वशक्तिवान की स्टेज पर एकाग्र बुद्धि से स्थित रहें क्योंकि हम अगर एकाग्र नहीं होंगे तो हमारी निर्णय शक्ति काम नहीं कर सकती है। हम कोई भी सही निर्णय तब कर सकेंगे जब हमारा मन बुद्धि एकदम एकाग्र हो।

तो दादी ने जो बाबा से बारह दिन की एप्लीकेशन डाली वो इसलिए कि क्योंकि अभी दादी के मन में और कुछ भी संकल्प नहीं है, जिम्मेवारी कोई भी नहीं है। सिर्फ विश्व-कल्याण की जिम्मेवारी है, एक ही संकल्प है। मन बुद्धि उसी एक सेवा में ही एकाग्र है, इसीलिए दादी ने बाबा को कहा तो मेरे को यहाँ रहाके मैं जो सेवा करूँगी वो आपके समान करूंगी। और हम लोग अभी कहते हैं बाबा हमारे साथ कम्बाइण्ड है, यह स्मृति में रखना पड़ता है लेकिन दादी के साथ बाबा कम्बाइण्ड तो क्या, लेकिन साथ में है ही है। तो वो भी पॉवर दादी की सेवा में ऑटोमेटिकली होगी। तो हम सबको अभी क्या करना है? दादी के प्यार का रिटर्न क्या देंगे? करेंगे ऐसी सेवा? एकदम ज्वालामुखी क्योंकि योग में एक होता है मा. सर्वशक्तिवान, तो शक्तियों की अनुभूति ऑटोमेटिकली होगी। हम यह नहीं कहेंगे मेरे में सहनशक्ति है, सामना करने की शक्ति नहीं है। जैसे बीज में सारे वृक्ष की सब शक्तियाँ स्वत: समाई हुई होती हैं। ऐसे हम भी बीजरूप यानि सर्वशक्तियों के बीजरूप प्रैक्टिकल रूप में होंगे तो हमारी सेवा यह हो सकती है। तो अभी यह पुरुषार्थ करना पड़ेगा। जब इन बातों में हमारा अटेन्शन चला जायेगा तो ऑटोमेटिकली हमारे दिल में शुभ भावना के सिवाए और कोई भी भावना नहीं होगी क्योंकि हमारे में संस्कारों का या वेस्ट थॉटस का टक्कर होता है लेकिन अगर हम शुभ भावना की स्टेज में रहें और मन में किसकी बुराई समाये नहीं, समझे भले लेकिन समाये नहीं तो हमारे मन और दिल में शुभ भावना रहेगी फिर हमारी चलन स्वत: अच्छी रहेगी। तो अभी सब वृत्ति से वायुमण्डल बनाओ, पहले अपना फिर सेवाकेन्द्र का, फिर विश्व का। तो दादी को रिटर्न देंगे ना! अच्छा - एवररेडी हो जाना।

प्रश्न:- दादी, बाबा ने सन्देश में कहा कि पाँच तत्वों ने दादी का स्वागत किया तो वो किस रूप से स्वागत किया?

उत्तर:- जैसे ड्रामा करते हैं तो उसमें पाँच विकारों को किस रूप में दिखाते हैं? सूक्ष्म मानव रूप में ही दिखाते हैं ना - काम, क्रोध, लोभ, मोह... ऐसे ही यह भी प्रकृति के रूप भी मानव रूप में ही होते हैं। तो जैसे ड्रामा में पार्ट करते हैं, ऐसे प्रकृति के तत्वों ने पार्ट किया। यह तो बाबा ने दादी की स्टेज बताई कि प्रकृति भी जैसे दासी रही क्योंकि जगतजीत तब बनेंगे जब प्रकृतिजीत और मायाजीत बनेंगे। वो भी पाँच हैं वो भी पाँच हैं। इस दस शीश वाले रावण को खत्म करेंगे तभी जगतजीत बनेंगे और दादी से कभी भी पूछते थे कि दादी आपका पुरुषार्थ कुछ चलता है, तो दादी कहती थी मुझे तो यही है कि मुझे कर्मातीत बनना ही है। कर्मातीत की ही धुन लगाती थी। तो बाबा ने एक्जाम्पुल दिखाया, दादी की जो इच्छा थी तो बाबा ने प्रकृति को दासियों के रूप में दिखाया। अच्छा।

दादी जानकी जी के अमृत वचन

"व्यर्थ संकल्प बहुत थकाते हैं, समर्थ संकल्प हों तो बाबा भी मदद करे"

(25-7-06)

बाबा हम बच्चों को देख रहा है और हम बच्चे बाबा से बात कर रहे हैं। रियलाइजेशन से पता चलता है कि मैं क्यों नहीं खुश हूँ। खुश न रहने का कारण और कुछ नहीं है, खुद ही हैं। पुरुषार्थ सच्चा नहीं किया है तो खुश कैसे रहेंगे। मैं खुश नहीं हूँ क्योंकि यह ऐसा है, वो वैसा है... जिस घड़ी भेंट हुई, यह ठीक काम करता है, यह नहीं करता है। भगवान के बच्चे को यह एलाऊ नहीं है। कोई पुराना कर्मबन्धन है तो वाह बाबा नहीं निकलता है। भले शरीर कैसा भी हो, पर वाह बाबा कहा, तो बाबा प्यार करता है। बाबा ने हमको शिक्षा दी है, जिसका खाते हो उसका गुण गाने का काम करो। ऐसे सो नहीं जाना, नहीं तो माया और ही लोरी देकर सुला देगी। फालतू संकल्प वालों को सोना बहुत अच्छा लगता है, बिचारे थके हुए हैं ना। विकल्प भले नहीं आते हैं, पर व्यर्थ संकल्प थकाते बहुत हैं। कुछ करने नहीं देते हैं। संकल्प समर्थ हों तो उठके खड़े हो जायें, बाबा भी मदद करने लग पड़े। व्यर्थ संकल्प में बाबा को याद करना भी मुश्किल है। काम क्या करेगा! न योग, न सेवा। व्यर्थ संकल्प न याद में रहने देंगे, न सेवा करने देंगे। बीती बातें जो इसने कहा, उसने कहा दिल को लग

गयी, तो मैं आत्मा हूँ, यह संकल्प नहीं उठता है। बाबा मैं आपका बच्चा हूँ, यह भी नहीं होता है। अन्दर से इतना दु:ख है। किसने कुछ कहा, इतनी अन्दर से ग्लानि आ जाती है, तो पूरे परिवार से ग्लानि आ जाती है। कहा एक ने पर कुछ भी अच्छा नहीं लगता है। फिर ब्रह्मा भोजन भी अच्छा नहीं लगता है। खाते ही पेट में दर्द पड़ता है।

बाबा कहते हैं भोजन बनाओ प्यार से, खिलाओ प्यार से, खाओ प्यार से। व्यर्थ का टाइम ही नहीं है। सुबह से उठते ही संकल्प ऐसा शुद्ध शान्त हो। अन्न का मन पर असर होता है, पर हमारे मन से अन्न भी इतना पावरफुल हो जाये। मन हेल्दी महसूस करे, हेल्दी माना मजबूत। मन के अन्दर कोई बीमारी नहीं हो, कमजोर मन है तो कोई न कोई इनफेक्शन हो गया। किसका असर हो गया। तो कमजोर की दवाई अलग, इन्फेक्शन की अलग है। अपने आपको इन्फेक्शन से सम्भालना है, कोई भी कीड़े से इन्फेक्शन लग जाता है।

दीदी की शिक्षाओं ने बड़ा सावधान किया है। दीदी को यह बहुत था कि दिल्ली के आजू-बाजू सेवा होनी चाहिए। एक दिन मैं लेटी थी तो कहा सिर में दर्द है क्या! तेरा लेटना शोभता है? तू सेवा नहीं करेगी तो दर्द पड़ेगा। इतनी अच्छी बड़ों की शिक्षाओं ने सपूत बनने में मदद की है। व्यर्थ बातों से हमारा कोई कनेक्शन नहीं है। जिम्मेवारी सिरदर्द तो नहीं है, और ही भाग्य है। इतना सिम्पल रहकर सैम्पल बनने का पाठ पढ़ाया है। सिम्पुल बनो माना फकीर बनकर नहीं रहना है, स्वच्छ रहना है, भाषा भी सिम्पल, फोर्स वाली नहीं। हर बात धारण करने के लिए दीदी ने इतना ध्यान खिंचवाया है। जो बाबा ने कहा आनन्द स्वरूप, प्रेम स्वरूप.... ऐसा बनकर दिखाना है।

श्रेष्ठ संकल्प बहुत काम करते हैं। ज्यादा संकल्प चलायेंगी तो आत्मा बाबा से दूर हो जायेगी। संकल्प हमारा निमित्त मात्र है, पर उसमें बाबा के प्यार की शक्ति भरी हुई हो। तो बोलने की जरूरत नहीं, आत्मा बाबा के नजदीक चली आये। देही-अभिमानी स्थिति का ऐसा अनुभव हो जो वो भी देह को भूल जाये। हम किसको कहेंगे तुम देही-अभिमानी बनो और मैं हूँ नहीं तो कैसे बनेंगी। देही-अभिमानी स्थिति की खींच हो। जब देही-अभिमानी स्थिति बनें तब बाबा के पास बैठ सके। बाबा कहता है आओ यहाँ गोद में बैठ जाओ। खुश रहना नहीं है, यह हमारा नसीब है। ऐसे अपने कर्मेन्द्रियों को जीत, देही-अभिमानी स्थिति से अतीन्द्रिय सुख में रहें फिर बाबा जो सुख देता है उसमें वर्सा भी है, वरदान भी है। पहले हमारी पर्सनल स्थिति में आत्म-अभिमानी स्थिति से कर्मेन्द्रियों पर जीत हो। कोई इच्छा नहीं, आसक्ति नहीं। भगवान चला रहा है, भगवान की पालना के अण्डर हूँ। बच्चा बनाया है तो पालना कर रहा है। भविष्य मेरा ऊंचा बने इसलिए पढ़ा रहा है। पढ़ाई से जो प्राप्ति है उसकी जिसको वैल्यू नहीं है, तो लाइफ क्या। जो बाबा कहते हैं तुम्हारे नयनों से, मस्तक से लाइट मिले। नयनों में परमात्मा ने ज्ञान की रोशनी दी है।

ड्रामा में कोई सीन आती है, बाबा ने कहा साक्षी होकर देखो तो खराब नहीं लगेगा। उसमें भला समाया है। बाबा को देखकर ही उन जैसा चित्र बनाओ, तो सारी बुद्धि उसमें चली जायेगी। बाबा की आँख कैसी, नाक कैसी, मुस्कराता कैसे है। चलता कैसे है और चलते-चलते सबको सुख दे देता है। मुस्कराते किसका दु:ख दूर कर देता है। कभी आओ, बच्ची कहा तो खुश हो गयी। इतना बाबा जैसा प्यार करेगा कौन! फिर भी कहता है तुमको कॉपी करने की छुट्टी है। एक्यूरेट नकल करना, किसी को भी न देखो। बाबा को देखो तो सपूत बनना, सबूत देना सहज है।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

''मैं-पन के अभिमान को समाप्त कर, बेहद के त्यागी और वैरागी बनो'' (29-7-98)

1) हमारे इस रथ का सारथी स्वयं बाबा है। इसलिए हम सभी बेफिक्र बादशाह हैं। सारथी जहाँ और जैसे रथ को चलाये, खड़ा करे, इशारा करे... उसी प्रमाण चलना है। दूसरा, मैं हमेशा समझती हूँ कि मुझे हे अर्जुन बनना है। आप हरेक हे अर्जुन हो ना! शिरोमणी गीता मशहूर ही है हे अर्जुन से। हे अर्जुन अर्थात् जिसको यह श्रीमत मिली। अर्जुन को जब साक्षात्कार हुआ तब निश्चय हुआ और बोला, हे भगवन जो आज्ञा। और आज्ञा पर चलते वह सदा आगे बढ़ते विजयी हुआ। तो आप हरेक वास्तव में हे अर्जुन हो और अर्जुन की बुद्धि में एक भगवान है।

2) दूसरी स्टोरी यह बताते हैं कि दुर्योधन और अर्जुन जब दोनों भगवान के सामने आये, तो दुर्योधन ने भगवान से उनकी पूरी सेना मांगी, माया मांगी और अर्जुन ने कहा मुझे सिर्फ आप

चाहिए। आप मिले सब कुछ मिला। फिर बताते हैं कि दुर्योधन ने कहा कि पहले तो मैं आया था लेकिन आपने अर्जुन से पहले क्यों पूछा। तो इशारा मिला कि तुझे अभिमान है, जो सिर के पास खड़े हो और अर्जुन में नम्रता है जो चरणों के पास खड़ा है। तो एक अभिमान के कारण सब कुछ प्राप्त होते भी उसकी हार हुई और नम्रता के कारण अर्जुन की जीत हुई - यह है महाभारत का दो शब्दों में वास्तविक सार। तो पहले निश्चय हो कि बाबा मेरा साथी है और बाबा ही मेरा सारथी है और उनकी श्रीमत पर कदम-कदम चलने में ही मेरा कल्याण है। विजय है। चाहे दुनिया खत्म हो जाये, अर्जुन के देखते-देखते सब मारे गये लेकिन अर्जुन सदा अडोल रहा। दुर्योधन ने अपना अभिमान बहुत दिखाया, लेकिन उनकी सारी अक्षोणी सेना खत्म हो गयी। अर्जुन को था निश्चय, इसी पर अडोल रहा, तो उसकी जीत हुई। और दुर्योधन की माया के कारण, देह-अभिमान के कारण हार हुई।

3) जिसकी बुद्धि में माया आयी और वैर आया तो समझो कि एक ना एक दिन सर्वंश नाश हो ही जाता है जैसेकि दुर्योधन का हुआ। कहने का मतलब कि बाबा हमें कहते कि हे अर्जुन तुम सदा प्रीत बुद्धि रहकर श्रीमत पर चलो और अपनी स्थिति को ऐसा अचल-अडोल बनाओ जो कभी तुम्हें माया हिला नहीं सके। अभी यह वक्त है ही अपने देह-अभिमान को तोड़ने का। इस देह-अभिमान के नशे के कारण ही आपस में विरोध होता इसलिए बाबा कहते कि कभी भी अपना नशा नहीं दिखाओ। नशा विरोध पैदा करता, एकता को तोड़ देता और अपनी स्थिति को नीचे गिराता है क्योंकि उल्टे नशे वालों की बुद्धि में रहता कि ''मैं''। अभी इस ''मैं'' अर्थात् अहम् का त्याग करो। यही बहुत बड़ा त्याग है।

4) हम शुरू से देखते आये हैं कि जब भी किसी को माया आयी है तो उसका कारण है अहम् (स्वयं का अहंकार) अहम् में सब आ जाता है। चाहे अपने बुद्धि का, अक्ल का, अपनी होशियारी का या कोई भी कार्य का, धन का नशा है, सर्विस का या जॉब का नशा है, प्राप्तियों का नशा है, लौकिक पढाई का नशा है - यह सब नशे बड़े नुकसान-कारक हैं। तो यह जो देह-अभिमान के अनेक गुप्त नशे हैं, यह सब बाहर से दिखाई नहीं पड़ते हैं इसीलिए कई बार आता है गोपी बनना अच्छा है क्योंकि गोपी बनने में नशा नहीं आता है और जब अपने को गोप समझते तो नशा चढता है, इसकी भी गुह्य फिलासॉफी है। जैसे उधव माना नशा। गोपी माना बाबा के लव में लीन, बाबा के लव में प्रीत बुद्धि। तो आप कभी उधव नहीं बनना, प्लीज़। उधव बनेंगे तो जरूर कुछ नशा चढ़ेगा। हम सभी गोपियाँ हैं, भले आप लोगों को पाण्डव कहें परन्तु प्रैक्टिकल में हम सभी गोपियाँ हैं, चाहे भाई हो चाहे बहनें हो। गोपी बनने में बहुत आनन्द है, उधव बनेंगे तो आनन्द नहीं ले पायेंगे। हमें बाबा के सामने न उधव बनना है, न नशा दिखाना है।

5) कहा जाता है बड़े सो बड़े छोटे शुभान-अल्ला। बड़ों को तो फिर भी फिकरात होगी, छोटे बेफिक्र होते हैं। हमें कभी किसी के प्रभाव में नहीं आना है। सबसे सूक्ष्म माया है प्रभाव। प्यारे भले रहो परन्तु उतना ही न्यारे रहो। पहले न्यारा रहकर फिर प्यारे रहो। न्यारे हो करके प्यारे नहीं बनो, नहीं तो माया के प्यारे बन जाते, क्योंकि उस प्यार में न्यारेपन की शक्ति नहीं होती है इसलिए पहले न्यारा बनो फिर प्यारे बनो तब बैलेन्स बराबर रहेगा।

6) बाबा ने हम सबको दो लेसन दिये हैं - एक बेहद के त्यागी बनो, दूसरा बेहद के वैरागी बनो। बेहद के त्याग में सभी सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों का त्याग हो जाता है। त्याग माना त्याग, त्याग में प्रभावित होने की बात नहीं आती है। अगर आती है तो वह भी माया है। बाबा को जिसका जितना भाग्य बनाना है उतना बनायेगा तो हम क्यों किसी के पीछे प्रभावित हों। किसी भी व्यक्ति पर वा वैभव पर हम प्रभावित क्यों हों! कई फिर सेवा करके अपने को ही ''वाह रे मैं'' समझते हैं अर्थात् मिया मिट्ठू बनते हैं। मिया मिट्ठू माना अपने को बहुत होशियार समझना। परन्तु बाबा ने हमें सिखाया है कि तुम कभी किसी बात में भी प्रभावित न हो। कैसी भी आकर्षण करने वाली बात तुम्हारे सामने आवे, अरे जिस पर दुनिया प्रभावित हो वह हमारे ऊपर कुर्बान है, हम क्यों किसी के ऊपर कुर्बान जायें। जिसको दुनिया पुकारे, वह हमारे ऊपर कुर्बान है, इससे बड़ा भाग्य और क्या चाहिए। तो इसके लिए हमें किसी के गुणों पर प्रभावित नहीं होना है। गुणवान है, गुण लो अच्छी बात है क्योंकि हमें सबसे अच्छे गुण लेना है। कोई की बुद्धि अच्छी है, उसकी बुद्धि का उपयोग करो। कोई का व्यवहार अच्छा है, उनसे कुशल व्यवहार की कला सीखो। किसमें लिखने का आर्ट अच्छा है, उससे वह आर्ट अपनाओ। सीखना हमारा फ़र्ज होता है परन्तु उसी पर प्रभावित होना, यह श्रीमत नहीं है - यह है माया।

7) अच्छे का गुण भले गाओ, कोई गुण सीखना है वह भी सीखो, गुण चोर तो भले बनो परन्तु किसी के गुणों के ऊपर न्योछावर नहीं हो जाओ। यह है ज्ञान की गहराई, इसीलिए हम आप सबको कहते - ना कभी नशा रखो, ना कभी अपना अभिमान रखो, ना कभी किसी पर प्रभावित हो, ना कभी किसी की आकर्षण में आओ। एक बाबा से सच्चे दिल की प्रीत हो, यही याद की यात्रा है। अगर किसी के भी नाम रूप से प्रीत हुई तो बाबा की याद में विघ्न जरूर पड़ेगा। अच्छा। ओम् शान्ति।